International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182, Print ISSN: 2349-5979, Impact Factor: RJIF 5.72
www.allsubjectjournal.com
Volume 4; Issue 5; May 2017; Page No. 310-312

वृक्षों की रक्षार्थ बलिदान : खेजड़ली मेला

डॉ0 बीना जैन

सह–आचार्य, चित्रकला विभाग, रा.वि.वि., जयपुर, राजस्थान, भारत।

प्रस्तावना

पर्यावरण के प्रति जागरूकता भारतीय समाज में आदिकाल से रही है। पर्यावरण के तत्त्वों के प्रति हमारी संवेदनशीलता मानवोचित गुण के रूप में देखी जाती रही है। भारतीय मनीषियों ने हजारों वर्ष पूर्व प्राकृतिक व्यवस्था को आत्मसात् करने का मार्ग अपनाया, क्योंकि प्रकृति के साथ छेड़छाड़ पूरे जीवमण्डल के लिए खतरा बन सकती थी। पर्यावरण के तत्त्वों–जल, पृथ्वी, वायु, अग्नि, आकाश, वनस्पति आदि के प्रति वेदों में असीम श्रद्धा दृष्टिगत होती है। इसके अलावा पुराण, उपनिषद्, श्रीमद्भागवत गीता, रामायण व महाभारत आदि में इस तथ्य के ज्वलन्त प्रमाण मिलते हैं कि भारतीय जनमानस ने सदैव प्रकृति की पूजा की है।

मानव और पेड़–पौधों का सम्बन्ध धरती पर जीव उत्पत्ति के काल से ही रहा है। इस निकट सम्बन्ध का सबसे मधुर स्वरूप भविष्य पुराण में अधिव्यक्त हुआ है। भविष्य पुराण में वृक्ष को पुत्रवत माना गया है। पितृ सत्ता–प्रधान हमारे देश में पुत्र अमित वात्सल्य का केन्द्र है। भविष्य पुराण के अनुसार छाया, फल, फूल, देने वाले वृक्षों का रोपणकर्ता जो मार्ग तथा देवालयों में वृक्ष लगाता है, वह अपने पितरों को बड़े–बड़े पापों से तराता हुआ महत्ती कीर्ति प्राप्त करता है।

भविष्य पुराण में यह भी वर्णन आता है कि वृक्षारोपणकर्ता के लौकिक–अलौकिक कर्म वृक्ष ही करते हैं तथा ये स्वर्ग प्रदान करते हैं। भविष्य पुराण के मध्य पर्व, प्रथम भाग अध्याय दस के अनुसार अश्वत्थ मुक्तिदाता, अशोक वृक्ष शोकहर्ता, बिल्व वृक्ष दीर्घायु प्रदाता, जामुन धनदाता, बकुल पापनाशक, आम अभीष्ट कामनाप्रद, कदम्ब लक्ष्मीप्रद महुआ, अर्जुन तथा बिल्व को अन्नादि प्रदाता माना जाता है।

वृक्ष हमारे लिए अपूर्व व्यवस्था प्रदान करते है। जलवायु पर प्रभाव डालने के साथ ही साथ वायुमण्डल में नमी बनाए रखते हैं तथा वर्षा आकर्षित करते हैं। वनों का किसी भी प्रदेश की जलवायु पर अत्यन्त महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है, विशेषकर राजस्थान जैसे शुष्क एवं कम वर्षा वाले राज्य में तो वृक्ष तथा अन्य वनस्पति की महत्ता बहुत ही अधिक है।

पश्चिमी राजस्थान में जहाँ लगभग 5 सेंटीमीटर (2 इंच) से 25 सेंटीमीटर (10 इंच) तक वर्षा होती है, और जहाँ का तापक्रम 50 डिग्री सेल्सियस (122 डिग्री फारनहाईट) तक पहुँच जाता है वहाँ वृक्षों का होना तो अत्यन्त ही आवश्यक है। पूर्वी राजस्थान में भी खेती को तीव्र हवा से बचाने के लिए, भूमि की क्षरण से रक्षा करने तथा नंगी पहाड़ियों पर वन लगाकर वहाँ के जलवायु को सुधारने में वृक्षों का महत्त्व विशेष है।

वनों और वृक्षों का विनाश वर्तमान समय में राजस्थान की सबसे गंभीर और संवेदनशील समस्या बन गया है। प्रदेश में निरन्तर पड़ रहे अकाल के पीछे भी अहम् कारण वनों का विनाश ही है। राज्य के 33 में से 27 जिलें भीषण जल संकट से जूझते रहते हैं। यह चिन्तनीय है कि प्रदेश में वन घटे हैं। गिरावट एक प्रमुख कारण, ईंधन एवं चारे की माँग में निरंतर हो रही वृद्धि है। विकास कार्यों, आवासीय जरूरतों, उद्योगों तथा खनिज दोहन के लिए भी, वृक्षों–वनों की कटाई होती है। देष की जीवन–रेखा कहीं जाने वाली कई नदियाँ गर्मियों में सूख जाती हैं। वहीं बारिश में इनमें बाढ़ आ जाती है। हिमाचल और कश्मीर में हाल ही के वर्षों में हुई तबाही का मुख्य कारण यहाँ के जंगलों की हो रही अंधाधुन कटाई ही है। वनों की बेरहमी से हो रही कटाई के कारण एक तरफ ग्लोबल वार्मिंग बढ़ रही है, वहीं दूसरी और प्रकृति का सन्तुलन बिगड़ रहा है। कई जीव हमारी धरती से लुप्त हो चुके हैं।

पर्यावरण संरक्षण के लिए पश्चिमी राजस्थान सम्पूर्ण विश्व में जाना जाता है। राजस्थानी की प्रसिद्ध कहावत ''सर सांठे रूंख रहे, तो भी सस्तो जांण'' (अर्थात् सिर कटवाकर वृक्षों की रक्षा हो सके, तो भी इसे सस्ता सौदा ही समझना चाहिए) को जोधपुर जिले के खेजड़ली गाँव के लोगों ने पूर्ण रूप से चरितार्थ किया था। वनों के संरक्षण तथा संवर्द्धन के लिए सन्त जाम्भोजी के अनुयायी बिश्नोई समाज ने सदैव सामाजिक प्रतिबद्धता को उजागर किया है। बिश्नोई सम्प्रदाय के संस्थापक सन्त जाम्भोजी (जम्भेश्वर) का जन्म राजस्थान के पीपासर गाँव (जिला नागौर) में सन् 1451 ई. में राजपूत क्षत्रिय परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम लोहट जी पंवार तथा माता का नाम हंसादेवी था। ये अपने माता–पिता की इकलोती सन्तान थे। जीवन के आरंभिक सात वर्षों तक ये कुछ भी नहीं बोल पाये थे। 27 वर्षों तक गाय चराते रहे। 34 वर्ष की आयु में जाम्भोजी ने सन् 1485 की कार्तिक सुदी अष्टमी को बिश्नोई धर्म का प्रवर्तन किया तथा अपने अनुयायियों को उनतीस नियमों का पालन करने के लिए प्रेरित किया। इन उनतीस नियमों में से आठ नियम जैविक वैविध्य तथा जानवरों की रक्षा के लिए है, सात धर्मादेश समाज की रक्षा के लिए है। इसके अतिरिक्त दस उपदेश स्वयं की रक्षा व अच्छे स्वास्थय के लिए है और शेष चार धर्मादेश प्रतिदिन भगवान का स्मरण और पूजापाठ करना है। बिश्नोई समाज के लिए प्रतिवर्ष मुकाम या मुक्तिधाम में मेला भरता है जहाँ हजारों की संख्या में बिश्नोई समुदाय के लोग आते हैं। सन्त जाम्भोजी ने जिस बिश्नोई समाज की स्थापना की, उस 'बिश' का अर्थ बीस और नोई का अर्थ नौ होता है। बीस + नोई = बिश्नोई/29। बिश्नोई सम्प्रदाय खेजड़ी को (Prosopic cineraria) को अपना पवित्र वृक्ष मानते हैं।

खेजड़ी को शमी वृक्ष के नाम से भी जाना जाता है। यह मूलतः रेगिस्तान में पाया जाने वाला वृक्ष है जो थार के मरुस्थल एवं अन्य स्थानों पर भी पाया जाता है। रामायण के अनुसार विजयादशमी या दशहरे के दिन शमी के वृक्ष की पूजा करने की प्रथा है। मान्यता है कि यह भगवान श्री राम का प्रिय वृक्ष था और लंका पर आक्रमण से पहले उन्होंने शमी वृक्ष की पूजा कर के उससे विजयी होने का आशीर्वाद प्राप्त किया था। आज भी कई स्थानों पर रावण दहन के बाद घर लौटते समय शमी के पत्ते स्वर्ण के प्रतीक के रूप में एक दूसरे को बाँटने की प्रथा हैं, इसके साथ ही कठिन कार्यों में सफलता मिलने की कामना की जाती है।

शमी वृक्ष का वर्णन महाभारत काल में भी मिलता है। अपने 12 वर्षों के वनवास के बाद एक साल के अज्ञातवास में पांडवों ने अपने सारे अस्त्र–शस्त्र इसी पेड़ पर छुपाए थे जिसमें अर्जुन का गांडीव

धनुष भी था। कुरुक्षेत्र में कौरवों के साथ युद्ध के लिए जाने से पहले भी पांडवों ने शमी के वृक्ष की पूजा की थी और उसे शक्ति और विजय प्राप्ति की कामना की थी। तभी से यह माना जाने लगा है कि जो भी इस वृक्ष की पूजा करता है उसे शक्ति और विजय प्राप्त होती है। एक अन्य कथा के अनुसार कवि कालिदास ने शमी के वृक्ष के नीचे बैठ कर तपस्या कर के ही ज्ञान की प्राप्ति की थी। ऋग्वेद के अनुसार शमी के पेड़ में आग पैदा करने की क्षमता होती है और ऋग्वेद की ही एक कथा के अनुसार आदिम काल में सर्वप्रथम पुरुओं ने शमी और पीपल की टहनियाँ को रगड़ कर ही आग पैदा की थी। मान्यता है कि शमी वृक्ष की लकड़ी यज्ञ की समिधा के लिए पवित्र मानी जाती है। शनिवार को शमी की समिधा का विशेष महत्त्व है। शनि देव को शान्त रखने के लिए भी शमी की पूजा की जाती है। शमी को गणेश जी का भी प्रिय वृक्ष माना जाता है और इसकी पत्तियाँ गणेश जी की पूजा में भी चढ़ाई जाती हैं।

समूचे विश्व में प्रकृति संरक्षण के लिए प्राणोत्सर्ग कर देने की खेजड़ली में घटित घटना का कोई सानी नहीं है। यह घटना सन् 1730 ई. की है। उस समय राजस्थान में जोधपुर के राजा अजीत सिंह थे। अजीत सिंह को युद्ध से कुछ अवकाश मिला तो उन्होंने मेहरानगढ़ किले में फूल महल बनवाने का निश्चय किया। नये महल के निर्माण में काम आने वाले चूने को निर्मित करने वाले भट्टों के ईंधन हेतु लकड़ियों की आवश्यकता हुई। महाराज ने मंत्री गिरधारीदास भंडारी को लकड़ियों की व्यवस्था करने का आदेश दिया। गिरधारीदास भंडारी की नजर महल से लगभग 25 किलोमीटर दूर स्थित गाँव खेजड़ली पर पड़ी। गिरधारीदास भंडारी और दरबारियों ने मिलकर राजा को सलाह दी कि पड़ोस के गाँव खेजड़ली में खेजड़ी के बहुत पेड़ हैं। वहाँ से लकड़ी मँगवाने पर चूना पकाने में कोई परेशानी नहीं होगी, इस पर राजा ने तुरन्त अपनी स्वीकृति दे दी।

खेजड़ली गाँव में अधिकांश बिश्नोई लोग रहते थे। बिश्नोईयों में पर्यावरण के प्रति प्रेम और वन्यजीव संरक्षण जीवन का प्रमुख उद्देश्य रहा है। खेजड़ली गाँव में प्रकृति के समर्पित इसी बिश्नोई समाज की 42 वर्षीय अमृतादेवी के परिवार में उनकी तीन पुत्रियाँ आसु, रतनी, भागु बाई और पति रामू खोड़ थे, जो कृषि और पशुपालन से अपना जीवन–यापन करते थे। खेजड़ली में राजा के कर्मचारी सबसे पहले अमृतादेवी के घर के पास में लगे खेजड़ी के पेड़ को काटने लगे तो अमृता देवी ने उन्हें रोका और कहा कि ''यह खेजड़ी का पेड़ हमारे घर का सदस्य है, इसे मैं नहीं कटने दूँगी।'' इस पर राजा के कर्मचारियों ने प्रति प्रश्न किया कि ''इस पेड़ से तुम्हारा धर्म का रिश्ता है, तो इसकी रक्षा के लिए तुम लोगों की क्या तैयारी है।'' इस पर अमृतादेवी और गाँव वालों ने अपना संकल्प घोषित किया ''सर सांठे रूंख रहे, तो भी सस्तो जांण'' उस दिन तो पेड़ कटाई का कार्य स्थगित कर राजा के कर्मचारी चले गये। लेकिन इस घटना की खबर खेजड़ली और आसपास के गाँव में शीघ्रता से फैल गई।

कुछ दिन पश्चात् मंगलवार, 21 सितम्बर सन् 1730 ई. को मंत्री गिरधारीदास भण्डारी स्वयं बहुत बड़ी सेना लेकर सूर्योदय से पूर्व ही, जब पूरा गाँव सो रहा था, उन्होंने अमृतादेवी के घर के पास लगे खेजड़ी के हरे वृक्षों को काटना आरम्भ कर दिया। कुल्हाड़ी की आवाज सुनकर अमृतादेवी अपनी तीनों पुत्रियों के साथ घर से बाहर आई। उसने ये कृत्य बिश्नोई धर्म में वर्जित (प्रतिबन्धित) होने के कारण उनका विरोध किया लेकिन सिपाही नहीं मानें। इस पर अमृतादेवी पेड़ से चिपक गई और कहा कि पेड़ काटना है तो पहले हमें काटना होगा।

राजा के सिपाहियों ने उसे पेड़ से अलग करने की बहुत कोशिश की परन्तु अमृतादेवी टस से मस नहीं हुई। इसके बाद सिपाहियों ने अमृता पर ही कुल्हाड़ी चलाना आरम्भ कर दिया। अमृता बिश्नोई के अंग कट–कट कर जमीन पर गिरने लगे। इसके बाद भी उसने गुरु महाराज की आज्ञा का पूरी तरह से पालना किया। अपनी माता के बलिदान को देखकर उसकी, तीनों पुत्रियों ने भी इसी प्रकार बलिदान दे दिया। यह ख़बर जंगल में आग की तरह फैल गई। आस–पास के 84 गाँवों के लोग सैकड़ों की संख्या में खेजड़ली में एकत्रित हो गए और एक मत से तय कर लिया कि एक पेड़ को बचाने के लिए एक बिश्नोई लिपटकर अपने प्राणों की आहुति देगा। सबसे पहले बुजुर्गों ने प्राणों की आहूति दी। तब मंत्री गिरधारीदास ने बिश्नोईयों को ताना मारा कि ये अवांच्छित बूढ़े लोगों की बलि दे रहे हो। उसके बाद तो ऐसा जलजला उठा कि बड़े, बुढ़े, जवान, बच्चे, स्त्री–पुरुष सभी में प्राणों की बलि देने की होड़ मच गई। बिश्नोई जन पेड़ों से लिपटते गए और प्राणों की आहुति देते गए। आखिर मंत्री गिरधारीदास भण्डारी को पेड़ों की कटाई रोकनी पड़ी। ये तूफान थमा, तब तक कुल 363 बिश्नोईयों (71 महिलाएँ और 292 पुरुष) ने पेड़ों की रक्षा में अपने प्राणों की आहूति दे दी। खेजड़ली की धरती बिश्नोईयों के बलिदानी रक्त से लाल हो गई। जिनकी स्मृति में खेजड़ली गाँव में प्रतिवर्ष विश्व का एक मात्र वृक्ष मेला भाद्रपद शुक्ल दशमी को भरता है, जिसमें हजारों की संख्या में लोग एकत्रित होते हैं।

समूचे विश्व में पेड़ों की रक्षार्थ में अपने प्राणों को उत्सर्ग कर देने की ऐसी कोई दूसरी घटना का विवरण नहीं मिलता है। इस घटना से राजा के मन को गहरा आघात लगा, उन्होंने बिश्नोईयों को सम्मानित करते हुए जोधपुर रियासत में पेड़ों की कटाई को प्रतिबन्धित घोषित किया और इसके लिए दण्ड का प्रावधान किया। बिश्नोई समाज का यह बलिदानी कार्य आने वाली अनेक शताब्दियों तक पूरी दुनिया के प्रकृति प्रेमियों में नई प्रेरणा और उत्साह का संचार करता रहेगा। बिश्नोई समाज आज भी अपने गुरु जाम्भोजी महाराज की उनतीस नियमों की राह पर चलकर राजस्थान के रेगिस्तान में खेजड़ी के वृक्षों और वन्यजीवों की रक्षा कर रहा है।

यह उल्लेखनीय है कि भारत में प्राचीनकाल से अनेक शताब्दियों से पर्यावरण का जो महत्त्व ग्रन्थों में बतलाया गया है, वह केवल पुस्तकों तक सीमित नहीं रहा, कभी धर्म के नाम पर, कभी लौकिक रीति–रिवाजों के नाम पर उन्हें सांस्कृतिक परिवेश में, सामाजिक और पारिवारिक जीवन में भी ग्रहण किया गया। भारत के सभी प्राचीन ग्रन्थों में चाहे वे धर्म ग्रन्थ हों, आयुर्वेद के ग्रन्थ हों या साहित्य हों, इसके प्रमाण मिलते हैं।

इन सब बिन्दुओं, उद्धरणों एवं संकेतों से यह स्पष्ट प्रतिभाषित होता है कि पर्यावरण सम्बन्धी जो चिन्तन, जैव विविधता सम्बन्धी जो धारणाएँ, परिस्थितियों से सम्बन्धित जो निष्कर्ष विश्व के विभिन्न अंचलों में गत पाँच दशाब्दियों में पनपे हैं, ठीक उसी प्रकार का चिन्तन भारत के प्राचीन ग्रन्थों में उपलब्ध होता है। इससे भी स्पष्ट होता है कि भारतीय परम्परा में पर्यावरण चिन्तन विपुल मात्रा में हुआ है जो आज भी प्रासंगिक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. एस.के. वर्मा : 'स्वस्थ पर्यावरण के लिए वृक्षारोपण', राज. पत्रिका–जयपुर, 14 मई 1987, पृ.सं. 5
2. राजकुमारी यादव : 'भारतीय वृक्षों के प्राचीन सन्दर्भ', राज. पत्रिका–जयपुर, परिवार परिशिष्ट, 28 अप्रैल 1993, पृ.सं. 1
3. आशीष वशिष्ठ : 'वृक्षों की अंधाधुंध कटाई से बढ़ता पर्यावरण संकट', डेली न्यूज ऐक्टिविस्ट, 24 जनवरी 2014
4. सन्तोष कुमार सिंह : 'पर्यावरण संरक्षण में चिपको आन्दोलन की प्रासंगिकता', कुरुक्षेत्र, जून 2012
5. कलानाथ शास्त्री : 'भारतीय परम्परा में पर्यावरण चिन्तन', युवा संस्कृति, मासिक पत्रिका, जून 2016, पृ.सं. 6

6. http:/hindi.indiawaterportal.org/node/48049
7. http://www.sahisamay.com/2015/03/खेजड़ली आन्दोलन
8. http://vishnoisamaj.blogspet.in/2012/12/blog-post_19.html
9. http://hi.wikipedia.org/wiki/ गुरु जम्भेश्वर